# प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना
# हिमाचल सरकार की पहल

किसानों के दीर्घकालीन कल्याण और उनकी समृद्धि के लिए हिमाचल सरकार की ओर से शुरू की गई सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती मील का पत्थर साबित हो रही है। वर्ष 2018 में माननीय मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर की सरकार ने सत्ता में आने के बाद अपने पहले ही बजट में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना की घोषणा की। बजट में इस योजना के लिए 25 करोड़ रूपये के बजट का प्रावधान कर सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि को माध्यम बनाकर किसानों को इससे जोड़ने का कार्य शुरू किया गया। इस खेती विधि ने किसान व बागवानों के व्यापक कल्याण एवं समृद्धि के लिए खेती की लागत को कम करने, आय को बढ़ाने, मानव एवं पर्यावरण पर रसायनिक खेती के पड़ने वाले दुष्प्रभावों से बचाने एवं पर्यावरण व बदलते जलवायु परिवेश के समरूप कृषि का मार्ग प्रशस्त किया है।

साढ़े तीन साल पहले षुरू की गई प्राकृतिक खेती के सफल परिणाम देखने को मिल रहे हैं और इतने कम समय में अभी तक 1,59,465 किसान परिवारों ने 9,212 हैक्टेयर भूमि पर इस खेती विधि को अपना लिया है। अभी तक यह खेती विधि प्रदेष की 98.6 फीसदी पंचायतों तक पहुंच चुकी है। इस साल इस योजना के तहत डेढ़ लाख किसानों को जोड़कर 12 हजार हैक्टेयर भूमि को प्राकृतिक खेती के तहत जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है।

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना को केंद्र सरकार की परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY) भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (BPKP) एवं आत्मा परियोजना के सम्मिलन के साथ चलाया जा रहा है। प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत पिछले साढ़े तीन सालों में 46.18 करोड़ बजट खर्च किया गया है। इसके अलावा केंद्र पोशित आत्मा योजना के तहत पिछले साढ़े तीन वर्षों में 52.72 करोड़ रूपए की धनराशि खर्च की गई है।

इस योजना का मार्गदर्शन प्रदेश स्तर पर माननीय मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में गठित शीर्ष समिति (Apex Committee) कर रही है। योजना का संचालन एवं

निगरानी प्रदेश स्तर पर मुख्य सचिव की अध्यक्षता में गठित विशेष कार्य बल (State Level Task Force) कर रहा है। इस योजना की निगरानी 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' प्रदेश के कृषि विभाग के माध्यम से कर रही है। जिला स्तर पर आत्मा परियोजना के अंर्तगत चलाया जा रहा है जिसमें जिला में तीन अधिकारी व खंड स्तर पर 3 खंड तकनीकी प्रबंधक और सहायक तकनीकी प्रबंधक के द्वारा यह योजना चलाई जा रही है। सरकार की ओर से चलाई गई यह एक अति महत्वकांक्षी योजना है, जो तेजी से प्रदेश भर में फैल रही है। इसका अंदाजा इस बात से लगता है कि वर्श 2018–19 में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' के तहत 500 किसानों को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया था, जबकि लक्ष्य से बढ़कर इस अवधि में प्रदेश के 2,669 किसानों ने इस खेती विधि को अपनाया। वहीं वित्त वर्ष 2019–20 के लिए रखे गए 50,000 किसानों के लक्ष्य को पार करते हुए 54,914 किसानों ने 2,451 हैक्टेयर भूमि पर प्राकृतिक खेती करना शुरू कर दिया। इसी प्रकार वर्ष 2020–21 के लिए लक्षित किसानों के लक्ष्य को पूरा करते हुए 59,243 नए किसानों ने 3,592 हैक्टेयर भूमि पर इस विधि को अपनाया। फरवरी, 2022 तक प्रदेश में पिछले साढे तीन सालों में 1,74,394 किसानों को प्रशिक्षण दिया गया और इनमें से 1,71,063 किसानों ने 9,221 हैक्टेयर भूमि पर प्राकृतिक खेती को अपना लिया है।

- किसान इस खेती विधि को अपना सकें इसके लिए सरकार की ओर से उन्हें विभिन्न अनुदान दिए जा रहे हैं।
- प्राकृतिक खेती की आधार भारतीय नस्ल की गाय की खरीद पर 50 फीसदी अनुदान (अधिकतम 25 हजार तक) और 5 हजार रूपये यातायात शुल्क के तौर पर दिया जा रहा है।
- गौशाला के फर्श को पक्का कर गोमूत्र एकत्र करने के लिए गड्ढ़ा बनाने पर 8 हजार रूपये, ड्रम लेने के लिए 2,250 रूपये और संसाधन भंडार खोलने के लिए 10,000 रूपये प्रति परिवार दिए जा रहे हैं।
- किसानों को यह खेती विधि आसानी से समझ आ सके इसके लिए खेती विधि से संबधित साहित्य भी राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई द्वारा निशुल्क मुहैया करवाया जा रहा है।

- किसानों को सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि का प्रशिक्षण देने के लिए हर साल इस खेती विधि के जनक पदम्श्री सुभाष पालेकर जी के दो बड़े प्रषिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।
- किसानों को इस खेती विधि का व्यवहारिक ज्ञान देने के लिए उत्कृष्ट किसानों के सफल खेती मॉडलों में भ्रमण करवाया जा रहा है।
- प्राकृतिक खेती को अपना चुके किसानों के उत्पादों के विपणन और उनके पंजीकरण के लिए प्रणाली तैयार की जा रही है।
- फसल गुणवत्ता बढ़ाने हेतू किसानों को अच्छे बीज मिलें इसके लिए अब प्रदेश में ही बीज तैयार करने का कार्य किया जा रहा है। इससे प्रदेश के किसानों को बाहरी राज्यों से बीज खरीदने की जरूरत नहीं रहेगी।

'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' मॉडल का देश के अन्य राज्यों जैसे गुजरात, हरियाणा इत्यादि ने भी अनुसरण करना षुरू कर दिया है। विभिन्न प्रदेशों के अधिकारी, किसान एवं पर्यटक आज प्रदेश में प्राकृतिक खेती के मॉडल देखने हेतु आ रहे हैं, जो इस छोटे से पहाड़ी राज्य के लिए बड़े ही गौरव की बात है। प्रदेश में शुरू की गई प्राकृतिक खेती के सफल परिणाम सामने आने लगे हैं। इस कृषि विधि से जहां लोगों को स्वस्थ भोजन मिल रहा है, वहीं दूसरी ओर किसानों की कृषि लागत में कमी और आय में वृद्धि दर्ज की गई है। प्राकृतिक खेती के उपर किए गए सर्वे के अनुसार खेती लागत में 43ः तक की कमी तथा बिना किसी विशेष बाजार के भी शुद्ध मुनाफे में 23ः तक की बढ़ोतरी आंकी गई है।

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान जैसी महत्वपूर्ण योजना का आगाज कर हिमाचल प्रदेश सरकार ने वर्तमान में जलवायु परिवर्तन के बढ़ते खतरे को कम करने के लिए भी सराहनीय प्रयास आरंभ किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ (United Nations Organazation) ने दुनिया भर के मानव कल्याण एवं पर्यावरण सरंक्षण हेतु 17 लक्ष्य (Sustainable Development Goals) वर्ष 2030 तक के लिए तय किए हैं। इन लक्ष्यों की पूर्ति हेतु प्राकृतिक खेती विधि एक मील का पत्थर साबित हो रही है। यह खेती विधि हिमाचल प्रदेश को मानव कल्याण एवं पर्यावरण सरंक्षण के स्थापित मानकों को पूरा करने के प्रयास हेतु विश्व पटल पर एक विशिष्ट स्थान प्रदान करेगी।

हिमाचल सरकार ने प्रदेश के सभी 9 लाख 61 हजार किसानों को सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि से जोड़कर पूरे देश में हिमाचल प्रदेश को प्राकृतिक राज्य के रूप में पहचान दिलवाने का लक्ष्य रखा है।

## योजना के अधीन नवीन प्रयास–

1. **प्राकृतिक खेती आधारित सतत् खाद्य प्रणाली – Sustainable Food Systems Platform for Natural Farming (SUSPNF)-** राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई की ओर से भविष्य की मांग एवं मूल्य की श्रंखला को देखते हुए एक नवोन्वेषी सतत् खाद्य प्रणाली का निर्माण किया जा रहा है। यह प्रणाली किसान एवं उपभोक्ता का बीच परस्पर विश्वास को कायम रखते हुए पारदर्शिता एवं उचित मूल्य के सिद्धांत का भी पालन करेगी। यह प्रणाली तकनीक एवं आधारभूत संरचना को सुदृढ़ करते हुए मांग एवं आपूर्ति की निरंतरता को कायम रखेगी।
2. नवोन्वेषी स्व प्रमाणीकरण प्रणाली– योजना के अधीन दुनियाभर में मान्य राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा करने वाली एक अनूठी स्व प्रमाणीकरण प्रणाली तैयार की जा रही है जो किसान एवं उपभोक्त के बीच पारदर्शिता एवं ट्रेसेबिलिटी सुनिश्चित करेगी। इस प्रमाणीकरण से बाजार में उत्पाद बेच रहे प्राकृतिक खेती किसान की आसानी से पहचान की जा सकेगी।
3. **पारंपरिक फसलों का बीज उत्पादन–** प्राकृतिक खेती की सफलता को देखते हुए अब इस विधि से उगाई विविध फसलों के बीज की मांग बढ़ी है। किसानों को उच्च गुणवत्ता का बीज सुनिश्चित करने के लिए राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई एक विस्तृत कार्ययोजना बनाकर काम कर रही है। प्राकृतिक खेती पद्धति से बीजोत्पादन करने पंर पारिस्थितिकी एवं किसानों की आर्थिक सुरक्षा होगी और उन्हें आय वृद्धि का अतिरिक्त विकल्प भी मिलेगा।
4. **प्राकृतिक खेती उत्पाद की मार्केटिंग के लिए कैनोपी–** प्राकृतिक खेती उत्पाद की मार्केटिंग की समस्या को हल करने की दिशा में कार्य करते हुए

राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई ने एक कैनोपी का प्रारूप तय कर लिया है और जल्द ही इसे प्रदेश के 50 किसानों को 50 प्रतिशत अनुदान पर आबंटित किया जाएगा। यह कैनोपी प्राकृतिक खेती किसान एवं उसके उत्पाद की अलग पहचान बनाने में सहायक होंगी।

5. **किसान–उत्पाद कंपनियां–** योजना के अधीन प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों के लिए किसान उत्पाद कंपनियां बनाने का काम किया जा रहा है। किसानों का समूह बनाकर छोटे–छोटे किसान उत्पाद संघ बनाकर इन्हें तकनीक, विपणन, खाद्य प्रसंस्करण और आदान निर्माण के लिए सहायता करने के साथ इन कंपनियों को एक राज्य स्तरीय फेडरेशन के तहत लाया जा रहा है।
6. **प्राकृतिक खेती उत्पाद के आउटलेट–** उपभोक्ता को स्वस्थ एवं रसायनरहित उत्पाद उपलब्ध करवाने के लिए पायलट आधार पर शिमला शहर में एक आउटलेट खोला जा रहा है। इसे साल के 365 दिन संचालित किया जाएगा और विभिन्न प्राकृतिक उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी।